उत्तर-पुस्तिका-5

हिंदी रतन

BLUE SKY
BOOKS INTERNATIONAL
2647, Roshan Pura, Nai Sarak,Delhi-110006
Phone : 98994 23454, 98995 63454
E-mail : blueskybooks@gmail.com

हिंदी रतन-5

अध्याय-1. सरिता

1. (क) सरिता का जल हिमगिरि से आता है। (ख) सरिता का जल शीतल और निर्मल होता है। (ग) सरिता का जल दिन-रात चलकर वसुधा का अंतस्तल धोता है। (घ) सरिता के जल से पथिक मृदु जल को पीकर सुख पाता है। (ङ) धरती का अंतस्तल कोमल और वत्सल होता है। **3.** ऊँचे शिखरों से **उतर-उतर**, **गिर-गिर गिरि** की चट्टानों पर, कंकड़-कंकड़ **पैदल चलकर**, **दिनभर**, **रजनीभर**, जीवनभर। धोता वसुधा का **अंतस्तल**, **यह लघु सरिता का** बहता जल। **4.** (क) सरिता (ख) नदी (ग) दूध-सा (घ) गोपाल सिंह 'नेपाली'। **भाषा-बोध: 1. मृदु-**कठोर, **जीवन-**मृत्यु, **निर्मल-**गंदा, **चंचल-**शांत, **ऊँचा-**नीचा, **कोमल-**कठोर, **लघु-**बड़ा, **शीतल-**ऊष्ण। **2. रजनी-**रात, निशा, रात्रि; **शिखर-**चोटी, उतंग, शीर्ष; **तन-**शरीर, बदन, काया; **जननी-**माँ, माता, अम्बा; **घटा-**बादल, फन, जलद; **गिरि-**पहाड़, पर्वत, नग; **वारि-**जल, पानी, तोय। **3.** स्वयं करें। **4. निकल-**जल, **चलकर-**जीवनभर, **पिघल-**विकल, **वत्सल-**अंतस्तल, **निर्मल-**निकल, **विकल-**विमल। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-2. दो गौरैयाँ

2. (क) ''छोड़ो जी, चूहों को तो निकाल नहीं पाए, अब चिड़ियों को निकालेंगे!'' माँ ने व्यंग्य से कहा। पिता जी ने समझा माँ उनका मजाक उड़ा रही हैं। वे फौरन उठ खड़े हुए और पंखे के नीचे जाकर ताली बजाने लगे, मुँह से 'श-श' करने लगे। कभी बाँहें झुलाई, कभी कूदने लगे। (ख) ''देखो जी, चिड़ियों को मत निकालो,'' माँ ने अबकी बार गंभीरता से कहा। ''अब तो इन्होंने अंडे भी दे दिए होंगे। अब ये यहाँ से नहीं जाएँगी।''(ग) यदि घोंसले में गौरैया के बच्चे न होते तो वे उड़कर बाहर चले जाते। (घ) यह कहानी मुझे अच्छी एवं मनोरंजक लगी। **3.** (क) आम का (ख) गौरैयों ने (ग) चिड़ियों के बच्चे। **4.** (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓ **भाषा-बोध:** **1.** (क) भूत काल, (ख) वर्तमान काल, (ग) भूत काल, (घ) भविष्यत् काल, (ङ) वर्तमानकाल। **2.** (क) चुपचाप (ख) एक नजर (ग) खिलखिलाकर (घ) तुरंत (ङ) जोर की। **करके सीखिए** स्वयं करें।

अध्याय-3 स्वास्थ्य और व्यायाम

2. (क) व्यायाम करने से शरीर स्वस्थ रहता है। (ख) व्यायाम का शाब्दिक अर्थ है—'कसरत'। इसमें अनेक प्रकार के कार्य शामिल होते हैं; जैसे—सवेरे जल्दी उठकर घूमने जाना, योग करना आदि। तरह-तरह के खेल भी व्यायाम के अंतर्गत आ जाते हैं; जैसे—हॉकी, फुटबॉल, क्रिकेट, बास्केटबॉल आदि। (ग) खेलने-कूदने से शरीर में

तेजी से रक्त-संचार होता है। शरीर में अधिक ऑक्सीजन जाने से प्राण-शक्ति बढ़ती है और शरीर हृष्ट पुष्ट होता है क्योंकि खेल-कूद सब लोग, सब स्थानों पर सदैव सुविधापूर्वक नहीं कर सकते, अत: लोग अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम करते हैं। (घ) सभी व्यायाम प्रत्येक व्यक्ति के लिए और प्रत्येक अवस्था में लाभदायक नहीं हो सकते। व्यक्ति को समय, आयु एवं शारीरिक शक्ति के अनुसार ही व्यायाम करना चाहिए। (ङ) व्यायाम के सम्बन्ध में पहली सावधानी है—सही व्यायाम का चुनाव। इसके बाद उपयुक्त समय, व्यायाम की उचित मात्रा आदि को निश्चित करना चाहिए। व्यायाम करते समय यदि थकान का अनुभव हो तो व्यायाम तुरंत बंद कर देना चाहिए। इसका अभ्यास धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए। व्यायाम करते समय नाक से साँस लेनी चाहिए। खाना खाने के पश्चात् व्यायाम नहीं करना चाहिए। व्यायाम के तुरंत बाद नहाना नहीं चाहिए। व्यायाम करने के थोड़ी देर बाद कुछ पौष्टिक पदार्थ; जैसे—दूध, फल का रस आदि लेना चाहिए। **3.** (क) दोनों (अ) व (ब) (ख) कसरत (ग) बच्चों (घ) व्यायाम (ङ) नाक। **4.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓। **भाषा-बोध: 1. बूढ़ा** आदमी, **अधिक** लोग, **स्वस्थ** शरीर, **उपयुक्त** समय, **बीमार** आदमी, **आवश्यक** नियम, **बौद्धिक** शक्ति, **भयानक** जानवर। **2. उपेक्षा-**उ + प् + ए + क् + ष् + आ, **मात्रा-**म् + आ + त् + र् + आ, **उपकरण-**उ + प् + अ + क् + अ + र् + अ + ण् + अ, **श्रम-**श् + र् + अ + म् + अ, **सदैव-**स् + अ + द् + ऐ + व् + अ, **साइकिल-**स् + आ + इ + क् + इ + ल् + अ **3.** स्वयं करें।

करके सीखिए-स्वयं करें।

अध्याय-4. माता को पत्र

1. (क) पहले के आर्य वीर भारत माता की सेवा के लिए अपना बहुमूल्य जीवन प्रसन्नता से न्यौछावर कर देते थे। (ख) हम कब तक सोते रहेंगे? हम कब तक अनावश्यक चीजों को लेकर खिलवाड़ करते रहेंगे? क्या हम अपने देश का रुदन देखते रहेंगे? (ग) यदि हम सबके होते हुए भी पशुओं के समान खाने और सोने से संतुष्ट रहें, इंद्रियों के दास बने रहें तो मनुष्य पशु के समान बन जाता है। (घ) सुभाषचंद्र बोस ने प्रभु से प्रार्थना की कि वह संपूर्ण जीवन दूसरों की सहायता में बिता सकें। (ङ) उस समय हमारा देश परतंत्रता की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। देशवासियों की दशा अत्यंत दयनीय थी। **3.** (क) प्रभावती (ख) कोलकाता में (ग) सुभाषचंद्र (घ) ईश्वर से (ङ) नेता जी। **4.** (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓(घ) ✗ (ङ) ✓। **भाषा-बोध: 1. हित-**अनहित, **स्वार्थहित-**स्वार्थी, **योग्य-**अयोग्य, **सपूत-**कपूत, **आवश्यक-**अनावश्यक, **अगला-**पिछला, **प्रसन्नता-**दु:ख, **स्वस्थ-**अस्वस्थ, **अतीत-**भविष्य,

सुशिक्षित–अशिक्षित। **2. माँ**–माएँ, **माता**–माताएँ, **प्रार्थना**–प्रार्थनाएँ, **परीक्षा**–परीक्षाएँ, **जड़**–जड़ें, **आशा**–आशाएँ, **बात**–बातें, **सेवा**–सेवाएँ, **संतान**–संतानें, **दशा**–दशाएँ, **चीज**–चीजें, **यात्रा**–यात्राएँ। **3.** स + आनंद–**सानंद,** कु + पात्र=**कुपात्र,** सह + योग–**सहयोग,** स + पूत=**सपूत,** बहु + मूल्य=**बहुमूल्य,** अधि + कार=**अधिकार,** अति + रिक्त=**अतिरिक्त,** उप + देश–**उपदेश**। **4.** (क) भारतीय (ख) बहुमूल्य (ग) निर्दय (घ) स्वार्थी। **करके सीखिए** स्वयं करें।

अध्याय–5. बालक चंद्रगुप्त

2. (क) बालक उसी घर के सामने खेल रहा था। (ख) ब्राह्मण ने कहा कि यह बड़ा होनहार बालक है। इसकी मानसिक उन्नति के लिए उन्होंने बालक को राजकुल भेजने का आग्रह किया। (ग) किसी राजा ने नंद की राजसभा की बुद्धि का अनुमान करने के लिए, लोहे के पिजड़े में मोम का सिंह बनाकर भेजा था। (घ) बालक ने लोहे की शलाकाओं को गरम करके उस सिंह को पिघलाकर पिंजड़े को खाली कर दिया। (ङ) राजा ने प्रसन्न होकर उस बालक को तक्षशिला के विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए भेजा। **3.** (क) पाटलिपुत्र (ख) महापद्मनंद (ग) राजक्रीड़ा(घ) राजसभा (ङ) चंद्रगुप्त। **4.** बालक ने राजा से, बालक ने ब्राह्मण से, नंद ने बालक से, राजा ने चंद्रगुप्त से। **भाषा-बोधः 1.** (क) नंद, मगध (ख) बालक (ग) बालक, सिंह (घ) बालक (ङ) चंद्रगुप्त, सिकंदर। **2. अग्नि**–आग, अनल, पावक; **गृह**–घर, गृह, आलय; **राजा**–नृप, सम्राट, राजन; **माँ**–माता, जननी, अम्बे; **जनक**–पिता, तात, बापू; **बालक**–लड़का, सुत, तनय। **3.** (क) गाय घास चर रही थी। (ख) तब तक उसकी बहनें वहाँ आ गई। (ग) देशद्रोहियों पर राजकोप है। (घ) ब्राह्मणों ने बालक को राजकुल भेजने का आग्रह किया। (ङ) मूर्ख सभासद को कोई उपाय न सूझा। **करके सीखिए**–स्वयं करें।

अध्याय–6. हम भारत की बेटी हैं

2. (क) भारतीय नारियाँ मरने से नहीं डरतीं। (ख) कविता में विदेशी शासकों को मारने की बात की गई है क्योंकि आज की लड़कियाँ तलवार उठाना सीख चुकी हैं। (ग) भारत की नारियाँ अपने देश की रक्षा के लिए दुश्मनों से लड़ने को तैयार हैं। (घ) स्वयं करें। **3.** (क) भारत की बेटियों की (ख) वीरांगना (ग) तलवार (घ) अज्ञात । **भाषा बोधः 1. क्षत्राणी**–क्षत्रिय, **सम्राट**–साम्राज्ञी, **विद्वान**–विदुषी, **वीरांगना**–वीर, **अभिनेता**–अभिनेत्री, **कवि**–कवयित्री, **प्रशासिका**–प्रशासक, **मालिक**–मालकिन, **मालिन**–माली, **पुरुष**–नारी। **2.** दुर् + जन=**दुर्जन,** अन + पढ़=**अनपढ़,** भर + पेट=**भरपेट,** अन + जान=**अनजान,** दुर् + बल=**दुर्बल**। **3.** (क) और (ख) पर (ग) अब, नहीं तो (घ) तो (ङ) जब। **4.** स्वयं करें। **करके सीखिए**–स्वयं करें।

अध्याय-7. सिंदबाद की यात्रा

2. (क) बगदाद शहर में सिंदबाद नाम का एक व्यक्ति रहता था। (ख) सिंदबाद माल बेचने के लिए जिस टापू पर पहुँचा वहाँ का वातावरण सुहावना था। चारों तरफ फल वाले छायादार वृक्ष थे। (ग) आँखें खुलने पर सिंदबाद ने देखा कि वह उस टापू पर बिलकुल अकेला है। उसके साथी उसे छोड़कर जा चुके थे। (घ) पक्षी के बड़े-से पंजे को देखकर सिंदबाद को एक उपाय सूझा। उसने हिम्मत करके अपनी पगड़ी उतारी और उसके एक छोर से खुद को तथा दूसरे छोर को पक्षी के पंजे में बाँध लिया। प्रात:काल वह पक्षी सिंदबाद को भी अपने साथ लेकर उड़ गया। (ङ) वह पक्षी हीरों की खान की घाटी पर उतरा। सिंदबाद ने अपने आपको उसके पंजे से छुड़ा लिया और एक पेड़ पर चढ़ गया। उसने देखा कि उस पक्षी ने एक साँप को अपनी चोंच में दबाया और उड़ गया। सिंदबाद इधर-उधर देख रहा था कि उसकी नजर एक गुफा पर पड़ी। वह पेड़ से उतरा और उस गुफा के अंदर चला गया। एक बड़े-से पत्थर से उसने गुफा का दरवाजा बंद कर लिया और किसी तरह वहाँ रात बिताई। सवेरा होने पर वह बाहर निकला। **3.** (क) धन-संपत्ति (ख) समुद्री यात्राएँ (ग) चीज़ (घ) अजगरों (ङ) व्यापारियों। **भाषा-बोध: 1. समुद्र-**सागर, जलधि, महासागर; **पहाड़-**पर्वत, नग, चोरी; **साँप-**सर्प, नाग, सरीसृप; **पक्षी-**खग, चिड़िया, पंछी; **पेड़-**वृक्ष, पादप, वट **2. बात-**बातें, चीज, चीजें; **चट्टान-**चट्टानें, टुकड़ा, टुकड़ें; **आवाज-**आवाजें, अंडा, अंडे; **रास्ता-**रास्ते, पंजा, पंजें; **पगड़ी-**पगड़ियाँ, **चोटी**-चोटियाँ। **3.** स्वयं करें। **करके सीखिए** स्वयं-करें।

अध्याय- 8. राष्ट्रमडल खेल

2. (क) गुयाना की अलग-से कोई टीम नहीं थी क्योंकि गुयाना स्वतंत्र देश नहीं था। (ख) एम्सटर्डम ओलंपिक समाप्त हो गए तो रॉबिन्सन के दिमाग में एक विचार आया कि क्यों न ब्रिटिश सत्ता के अधीन सभी देशों के खिलाड़ियों के लिए किसी खेल मेले का आयोजन किया जाए। उसने ऐसा इसलिए सोचा कि कई देशों के खिलाड़ियों को आलंपिक या दूसरी विश्वस्तरीय खेल स्पर्धाओं में भाग लेने का मौका नहीं मिल पाता था। चूँकि वे स्वतंत्र देश न होकर ब्रिटिश साम्राज्य के गुलाम थे। (ग) रॉबिनसन के प्रयासों से सभी खिलाड़ियों को खेलने का मौका मिला, जिनमें प्रतिभा तो है पर जिन्हें उचित मंच नहीं मिल पाता। मार्क्स रॉबिनसन का यह सपना न केवल सच हुआ बल्कि उनके द्वारा लगाया गया नन्हा-सा पौधा अब विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुका है। (घ) 'कॉमनवेल्थ' (राष्ट्रमंडल) का अर्थ है—समान सोच, विरासत और संस्कृति वाले देश। (घ) सिंगापुर-घोषणा के अनुरूप सदस्य देशों के समान लक्ष्य और आदर्श हैं—(i) शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का पालन करना। (ii) मैत्री और भाईचारा बढ़ाना। (iii)

लोकतंत्र का पालन करना और उसका अधिकतम प्रसार करना। **3.** (क) मैनेजर (ख) ब्रिटेन (ग) 1978 से (घ) गुयाना । **भाषा-बोधः 1.** कल्पना+इक=**काल्पनिक,** स्व+तंत्र=**स्वतंत्र**, नगर+इक=**नागरिक**, परा+अधीन=**पराधीन**, प्रमाण+इत=**प्रमाणित**, स्व+अभिमान=**स्वाभिमान**, आयोजन+इत=**आयोजित**, सद्+उपयोग=**सदुपयोग**। **2.** लोकतंत्र**-लोक का तंत्र**, मम्मी-पापा**-मम्मी और पापा**, गंगातट-**गंगा का तट**, नदी-नाले-**नदी और नाले**, सिरदर्द-**सिर का दर्द**, दाल-रोटी**-दाल और रोटी**, देशभक्त**-देश का भक्त**, दूध-दही-**दूध और दही**। **3.** (क) वरुण रोज पढ़ता है क्योंकि उसको प्रथम आना है। (ख) मेहनत करोगे तो पास हो जाओगे। (ग) मैंने उसको समझाया परंतु वह समझ न सका। (घ) मेलविल ने खेलों की शुरुआत की और इन खेलों का नाम ब्रिटिश एंपायर गेम्स रखा। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-9 कागज़ की आत्मकथा

2. (क) पहले लोगों के पास कागज नहीं था-वे पेड़ के पत्तों, लकड़ी, छाल, चमड़े, ईंट आदि पर लिखते थे। (ख) साइलून नाम के एक व्यक्ति ने कागज का आविष्कार किया। वह चीन का निवासी था। (ग) कागज को लकड़ी के रेशों से बनाया जाता है। (घ) कागज बनाने के लिए पहले लकड़ी के लट्ठों को काटा और छीला जाता है फिर उनमें पानी मिलाकर आग पर पकाया जाता है, इस प्रकार लुगदी बन जाती है। इस लुगदी को तार की जाली से छाना जाता है और फिर पानी निकली इस लुगदी को दबाकर कागज की परत बनाई जाती है। इसे बनाने के लिए कई तरह के रसायनों का भी प्रयोग किया जाता है। (ङ) हमें ध्यान रखना चाहिए कि कागज का दुरुपयोग कभी न हो। इसे फाड़कर इधर-उधर न फेंकें बल्कि फिर से लुगदी बनाकर इसे नया जीवन दें। इसे पुनर्निर्माण या रीसाइकिलिंग कहते हैं। **3.** (क) चीन (ख) दोनों (ग) पेड़ (घ) मौसम। **4.** (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓ **भाषा-बोधः 1.** डिब्बा**-डिब्बी**, थैला**-थैली**, पत्ता-**पत्ती**, पश्चिम**-पश्चिमी**, उत्तर**-उत्तरी**, पूर्व**-पूर्वी**, दक्षिण**-दक्षिणी**, जाल**-जाली।** **2.** सुरक्षित**-असुरक्षित**, संभव**-असंभव**, आखिर**-शुरू**, अच्छी**-बुरी**, कठिन**-सरल**, विशेष**-सामान्य**, सावधानी**-असावधानी**, निर्माण**-ध्वंस**। **3.** स्वयं करें। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-11 मीरा पदावली

2. (क) मीरा के प्रभु सांवले रंग-रूप के हैं। (ख) मीरा के पास विष का प्याला सास ने भेजा था। (ग) मीरा ने राम नाम रूपी रत्न प्राप्त किया। (घ) मीरा के अनुसार राम नाम रूपी धन प्रतिदिन बढ़ता है। (ङ) मीरा प्रसन्न होकर भगवान श्री कृष्ण का गुणगान

करती हैं। **3.** (क) नंदलाल (ख) पग (ग) रामरतन (घ) बावरी। **4.** (क) प्रभु श्री कृष्ण की कमर में छोटी-छोटी घंटिका सुशोभित हैं तथा पैरों में घुँघरू मीठे स्वर में बज रहे हैं। मीरा कहती है भगवान श्री कृष्ण संतो वो सुख एवं स्नेह देने वाले हैं। (ख) प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री कहती है कि मुझे जो राम नाम रूपी धन प्राप्त हुआ है उसी के लिए मैंने जगवालों को छोड़ दिया है। यह धन खर्च नहीं होता, न ही कोई चुरा सकता है। यह तो दिन प्रतिदिन सवाया बढ़ता जाता है। **भाषा-बोधः 1.** भाल-**माल**, दासी-**नासी**, बिसाल-**रसाल**, पायो-**अपनायो**, रसाल-**गोपाल**, सवायो-**खोवायो**, आयो-**गायो**, हाँसी- **दासी 2.** नेत्र-**आँख**, विशाल-**बड़ा**, वत्सल-**दयालु**, रत्न-**धन**, अमोलक-**अमूल्य**, हर्ष-**खुशी**, कृपा-**दया**, यश-**प्रशंसा 3.** स्वयं करें। **करके सीखिए-**स्वयं करें

अध्याय-12 पहाड़ी देश 'नेपाल'

2. (क) नेपाल भारत और चीन के बीच में बसा एक छोटा-सा पहाड़ी देश है। इसके उत्तर में तिब्बत और चीन है। इसके पूर्व में सिक्किम तथा पश्चिम में बंगाल है। इसके दक्षिण में उत्तर प्रदेश और बिहार राज्य तथा पश्चिम में उत्तर प्रदेश का उत्तरी भाग है। (ख) नेपाल के निवासियों का प्रमुख व्यवसाय खेती है। धान, जूट और गन्ना यहाँ की मुख्य पैदावार है। यहाँ नदियों की घाटियों में गेहूँ, मक्का और अफीम की खेती होती है। अदरक भी यहाँ खूब पैदा होता है। (ग) काठमांडू का बाजार भी अपने सौंदर्य के कारण आकर्षण का केंद्र है। यहाँ देश-विदेश की प्रायः सभी आवश्यक वस्तुएँ मिल जाती हैं। यात्रियों के आवागमन के कारण यहाँ खूब रौनक रहती है। (घ) काठमांडू में पशुपतिनाथ का मंदिर हिंदुओं का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। इस मंदिर के दरवाजों पर चाँदी से की गई मीनाकारी कला-कौशल में अद्‌भुत है। काठमांडू में महेन्द्रनाथ का मंदिर भी दर्शनीय है। यहाँ का स्वयंभू मंदिर विश्व का सबसे बड़ा मंदिर है। (ङ) शिलाजित काठमांडू की चट्टानों से अधिक मिलता है, जो दवाइयों में प्रयोग होता है। **3.** (क) उत्तर (ख) याक (ग) काठमांडू (घ) हिंदू धर्म। **4.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗

भाषा-बोधः 1. (क) परिश्रमी (ख) आकर्षक (ग) पर्वतारोही (घ) ऐतिहासिक (ङ) दर्शनीय। **2.** (क) **ग्रह-**ग्रह-नक्षत्र आदि, **गृह-**घर (ख) **अच्छा-**बढ़िया, **इच्छा-**अभिलाषा (ग) **रंक-**गरीब, **रंग-**रंगने की वस्तु (घ) **तरंग-**लहर, **तुरंग-**घोड़ा (ड.) **कुल-**वंश, **कूल-**किनारा (च) **बस-**एक यातायात का साधन, **वश-**अधिकार (छ) **कंकाल-**हड्डी, **कंगाल-**भिखारी (ज) **अंक-**संख्या, **अंग-**भाग **2.** देव + आलय=**देवालय**, हरि + ईश=**हरीश**, देव + इंद्र=**देवेन्द्र**, अति + अधिक=**अत्यधिक**, सु + आगत=**स्वागत**, मनः + रंजन=**मनोरंजन**, नमः + कार=**नमस्कार**, तप + बल-तपोबल। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-14 घटा घिरी झूम के

2. (क) घटा पर्वत के शिखरों से आई है। (ख) घटा के साथी बादल, हवा, बूँद हैं। (ग) घटा धूमधाम और तड़क-भड़क के साथ आई है। (घ) घटा के घिर जाने पर मोर नाचने लगता है। हवाएँ चलने लगती हैं, पेड़ों की पत्तियाँ एवं पत्ते तालियाँ बजाने लगती हैं। चारों तरफ सुखद वातावरण बन जाता है। **3.** (क) घटाएँ मस्ती में डूबी चली आ रही हैं। (ख) बूँदें खुशहालियाँ लाएँगी। (ग) दोनों में (घ) पत्ते। **भाषा-बोधः 1. पर्वत-**पहाड़, नग, शिखर; **तालाब-**पोखर, सरोवर, झील; **बिजली-**विद्युत, चपला, दामिनी; **घटा-**बादल, घन, जलद; **पेड़-**वृक्ष, पादप, वट। **2. पीपल-**जातिवाचक, **खुशहाली-**भाववाचक, **शोर-**भाववाचक, **हिमालय-**व्यक्तिवाचक, **मस्ती-**भाववाचक, **मोर-**जातिवाचक, **हवा-**जातिवाचक, **घटा-**जातिवाचक, **बाजार-**जातिवाचक, **गरजन-**भाववाचक। **3. अधिकार-**अनाधिकार, **प्यार-**घृणा, **स्वागत-**तिरस्कार, **शोर-**शांत, **घनी-**विरल, **मासूम-**चंचल, **शिखर-**चरण, **इधर-**उधर। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-15 मेरी गाय

2. (क) गोनू झा ने गाँववालों को गाय के बारे में बताने के लिए इकट्ठा किया। (ख) गोनू झा की पत्नी उनके बहाने सुन-सुनकर तंग आ गई थी। आखिर उसने गोनू झा को धमकी देते हुए कहा, ''अगर तुम गाय लेकर नहीं आए तो मैं अपनी जान दे दूँगी।'' बेचारे गोनू झा के सामने अब गाय ले आने के सिवा कोई चारा न बचा था। (ग) गाय खरीदने के बाद गोनू झा को एक चिंता सताए जा रही थी कि अब सैकड़ों बार गाय के बारे में गाँव वालों के एक जैसे सवालों के जवाब देने पड़ेंगे। (घ) चिंता से छुटकारा पाने के लिए गोनू झा ने उपाय सोचा कि क्यों न सब गाँव वालों को एक ही बार में सब कुछ बता दिया जाए ताकि वे बारी-बारी पूछने न आएँ। **3.** (क) कथावाचन (ख) सोनपुर के मेले से (ग) चोर-चोर। **4.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✗ **भाषा-बोधः 1.** (क) मूल्य (ख) शिष्ट (ग) अवश्य (घ) कृपा। **2. नरेश-**राजा, नृप, सम्राट; **दिन-**दिवस, वासर, वार; **रात-**निशा, रजनी, रात्रि; **गाय-**धेनु, सुरभि, गौ; **सोना-**कनक, कचन, स्वर्ण **3.** स्वयं करें। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-16 हेलन केलर

2. (क) दुर्भाग्यवश जब हेलेन केलर उन्नीस माह की हुई तो उसे तेज बुखार हो गया। बुखार तो तीन-चार दिन में ठीक हो गया लेकिन इसकी देखने, बोलने व सुनने की क्षमता चली गई। (ख) इलाज के सिलसिले में श्रीमती केलर की मुलाकात डॉ० माइकल एनेग्नास से हुई। उन्होंने एक कुशल अध्यापिका एनी सुलिवान को टसकंबिया भेज दिया। एनी सुलिवान खुद कुछ साल तक दृष्टिहीन रह चुकी थी। डॉ० एनेग्नास ने ही उसकी

आँखों का ऑपरेशन करके उन्हें रोशनी प्रदान की थी। (ग) थोड़े ही दिनों में, हेलन के स्वभाव में परिवर्तन आने लगा। उसका हठ और क्रोध दूर होने लगा, अब वह नम्र व हँसमुख हो गई। उसके अंदर सीखने की और काम करने की लगन पैदा होती चली गई। (घ) हेलन की विश्वप्रसिद्ध रचनाएँ 'मेरा धर्म' और 'मेरी जीवन कहानी' हैं। (ङ) इस पाठ से हमें शिक्षा मिलती है कि यदि व्यक्ति में साहस और लगन हो तो असंभव कार्य को भी संभव बनाया जा सकता है। **3.** (क) 1880 ई० में (ख) 19 माह (ग) ये दोनों (घ) 88 (ङ) 1968। **4.** (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗ **भाषा बोध:** **1.** (क) विशेषज्ञ (ख) हँसमुख (ग) अंधा (घ) धैर्यशाली (ङ) असंभव। **2. उत्साह-**अनुत्साह, **कुशल-**अकुशल, **गहरा-**उथला, **भलाई-**बुराई, **संपन्न-**विपन्न, **उन्नति-**अवनति, **आशा-**निराशा, **सक्षम-**अक्षम, **स्वस्थ-**अस्वस्थ, **बालक-**वृद्ध, **दुर्भाग्य-**सौभाग्य, **असंभव-**संभव। **3.** (क) वह अत्यंत सुंदर एवं स्वस्थ होगी। (ख) ईश्वर एक द्वार बंद करता था तो वह दूसरा द्वार खोल देता था। (ग) कम उम्र की लड़की ने हेलन को पढ़ाया।(घ) माता-पिता हेलन की खूब देखभाल करते हैं। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-17 पेट्रोलियम की कहानी

2. (क) अशुद्ध मिट्टी का तेल ही पेट्रोलियम कहलाता है। (ख) पेट्रोलियम जमीन की बहुत गहराई से निकाला जाता है। (ग) तेल के कुएँ मशीनों (यंत्रों) की सहायता से खोदे जाते हैं। कुछ गहराई के बाद कुओं में पानी आ जाता है। तब पानी के रास्ते से होते हुए पंप जमीन में सैकड़ों मीटर नीचे तक पहुँचाए जाते हैं। जब ये पंप तेल की सतह में पहुँच जाते हैं, तब इन पंपों द्वारा तेल को बाहर खींचते हैं। फिर इसे इकट्ठा करके शुद्ध किया जाता है। सफाई के समय जो गैस बाहर निकलती है, उसे भी इकट्ठा कर लिया जाता है। यही गैस ठंडी होकर ईंधन जलाने के काम आती है। (घ) पेट्रोलियम का सबसे शुद्ध रूप पेट्रोल कहलाता है, जो बहुत जल्दी आग पकड़ता है। पेट्रोल को कार, स्कूटर, हवाई जहाज आदि को चलाने के काम में लाया जाता है। (ङ) पेट्रोलियम का एक रूप डीजल होता है। यह आग को जल्दी नहीं पकड़ता और सस्ता भी होता है। अब बहुत-सी रेलगाड़ियाँ और इंजन डीजल से ही चलते हैं। **3.** (क) पेटोलियम (ख) शुद्ध (ग) पेट्रोल (घ) आवश्यक। **4.** (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗ **भाषा-बोध: 1.** (क) अशुद्ध (ख) परमात्मा (ग) जंतु (घ) थल। **2.** (क) ने, को, से (ख) ने, को (ग) ने, को (घ) ने, में। **3.** (क) पोषक (ख) नाशक (ग) धारक (घ) ग्राहक। **करके सीखिए-**स्वयं करें

अध्याय-18 जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान

2. (क) हमारी सरकार ने वन्य पशुओं के संरक्षण के लिए विभिन्न राज्यों में राष्ट्रीय उद्यानों या अभयारण्यों की स्थापना की है। (ख) कार्बेट नेशनल पार्क से ही 1973 में 'प्रोजेक्ट टाइगर' की शुरुआत हुई और परिणामस्वरूप कुछ वर्षों में बाघों और गुलदारों आदि वन्य पशुओं की संख्या में काफी वृद्धि हुई। आजकल यहाँ बाघों की संख्या सौ से भी अधिक हो गई है। (ग) अभयारण्य का भ्रमण करने के लिए काफी संख्या में सड़कें और कच्चे मार्ग बन हुए हैं। अधिकांश पर्यटक हाथियों पर बैठकर वन्य जीवन का आनंद लेते हैं। मिनी बस और जीप द्वारा भी अभयारण्य की सैर की जा सकती है। (घ) बाघ और हिरनों के अलावा कॉर्बेट पार्क में तेंदुए, जंगली बिल्ली, हाथी, नीलगाय, भालू, साही आदि वन्य जीव भी बहुतायत में मिलते हैं। कभी किसी पेड़ की टहनी पर सुस्ताना तेंदुआ दिखाई देता है। (ङ) कार्बेट नेशनल पार्क में भाँति-भाँति के वृक्षों, झाड़ियों और घास कुल के पौधों से हरा-भरा कार्बेट नेशनल पार्क सचमुच अद्भुत है। वन्य प्राणियों को उनकी मस्ती में विचरते देखना प्राचीन समय के ऋषि-मुनियों के आश्रम की याद दिलाता है। यहाँ प्रकृति और प्राणियों का अद्भुत सामंजस्य दर्शनीय है। पर्यटक यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य और अद्भुत दृश्यों की छवि अपने मन में ही नहीं, कैमरे में भी बंद करना नहीं भूलते। **3.** (क) उत्तराखंड (ख) 550 (ग) बाघ (घ) 1973 (ङ) सौ। **भाषा बोध:**
1. (क) क्या पिताजी दफ्तर जा रहे हैं? (ख) कल कब गेहूँ पिसवाकर लाने हैं? (ग) मिहिर को सामने आने में किससे शरम आ रही थी? (घ) कछुआ धीरे-धीरे क्यों चलता आ रहा था? (ङ) रात को खेत में एक सियार कैसे घुस आया? (च) पिंकी ने दुकानदार से पता क्यों पूछा? **2.** (क) लेखक (ख) आखेटक (ग) मनमोहनी (घ) अविस्मरणीय (ङ) वर्तमान (च) आकर्षक। **3. देशी-**विदेशी, **प्राकृतिक-**कृत्रिम, **पहला-**अंतिम, **स्वाधीनता-**पराधीनता, **सम्मान-**तिरस्कार, **आकर्षण-**अनाकर्षण, **मधुर-**तीखा, **प्राचीन-**अप्राचीन **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-19 एक बूँद

2. (क) घर से निकलते समय बूँद ने सोचा कि मैं घर छोड़कर क्यों आगे बढ़ गई। (ख) बूँद देव से कह रही थी कि हे प्रभु! मेरे भाग्य में क्या लिखा है। (ग) हवा बूँद को एक खुले सुंदर सीप के मुँह में ले गई। (घ) घर छोड़ने में लोगों को अपने अस्तित्व की चिंता होने लगती है। (ङ) घर छोड़ने पर कभी-कभी व्यक्ति एक सफल व्यक्ति बन जाता है। **3.** (क) बादलों (ख) बूँद (ग) कमल (घ) सीप (ङ) मोती। **4.** देव! ..... फूल में?
प्रस्तुत पंक्तियों में बूँद ईश्वर से पूछती है कि हे देव! मेरे भाग्य में क्या लिखा है। मैं बचूँगी

या मिट्टी में मिल जाऊँगी या किसी आग में गिरूँगी या किसी कमल के फूल में चू पड़ूँगी। लोग ..... कर।

प्राय: लोग अपना घर छोड़ते समय झिझकते एवं सोचते रहते हैं, लेकिन प्राय: उनके घर छोड़ने से वे जीवन में सफलता के मार्ग को चूमते हैं। **भाषा-बोध: 1. बढ़ी-**कढ़ी, **वह-**बह, **घर-**कर, **समुंदर-**सुंदर **धूल-**फूल **अनमनी-**बनी। **2.** (क) हवा बोली, ''मैं तुम्हें समुंदर की ओर ले जाऊँगी।'' (ख) सीप कहने लगा, ''एक बूँद मेरी ओर चली आ रही है।'' (ग) बादल बोला, ''घर छोड़ते समय तुम क्यों घबरा रही हो?'' (घ) बूँद बोली, ''वाह! मैं तो मोती बन गई।'' **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-20. लुई ब्रेल

2. (क) कूप्रे के चर्च में नए पादरी जैक्विस पेलुई आए। उनकी नजर लुई पर पड़ी और उन्होंने उसे अपना लिया। लुई के जीवन में प्रकाश आ गया। वह उसे लेकर किसी बड़े वृक्ष के नीचे बैठ जाते, उसे बाइबिल की कहानियाँ सुनाते, विज्ञान और इतिहास की कहानियाँ सुनाते। उन्होंने ही लुई को फूलों और पक्षियों की पहचान कराई, साथ ही संगीत भी सिखाया। (ख) लुई ने मोटे कागज पर छह बिंदुओं का एक नमूना पेंसिल से बनाया बिलकुल उसी तरह जैसे लूडो के पासे की सतह पर होता है, फिर उसने बिंदुओं को उभारकर वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर का नमूना तैयार कर लिया। यह तरीका एकदम सरल था। लुई की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने दृष्टिहीनों के पढ़ने के लिए एक नई सरल लिपि विकसित कर ली थी। इस प्रकार लुई ने दृष्टिहीनों की पढ़ने की समस्या को दूर किया। (ग) लुई ने दृष्टिहीनों की समस्या को दूर करने का निश्चय कर लिया। तभी 1821 में चार्ल्स बार बियर नामक फ्रांसीसी सज्जन अंध विद्यालय में आए। उन्होंने सैनिकों के लिए रात के अँधेरे में संदेश पढ़ने के लिए एक लिपि तैयार की थी। इससे उन्हें एक नई लिपि तैयार करने की प्रेरणा मिली। (घ) आज दृष्टिहीनता और ब्रेल एक-दूसरे के पर्याय बन चुके हैं। संसार का हर दृष्टिहीन व्यक्ति ब्रेल लिपि का आविष्कार करने वाले लुई ब्रेल को अपना मसीहा मानता है। **3.** (क) सैनिकों के लिए (ख) अच्छी बुनाई और चप्पलें बनाने के लिए (ग) तपेदिक। **4.** (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓ **भाषा-बोध: 1. साधारण** परिवार, **विनम्र** व्यवहार, **दृष्टिहीन** छात्र, **असाधारण** योग्यता, **कठोर** परिश्रम, **अबोध** बालक। **2.** स्वयं करें। **करके सीखिए-**स्वयं करें।